बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म बंगाल के नेहाटी जिले के काठालपाड़ा गांव में 25 जून, 1838 को हुआ था। इनके पिता जादवचंद्र चट्टोपाध्याय बंगाल के चौबीस परगना जिले में डिप्टी मजिस्ट्रेट और कलेक्टर थे। 7 अगस्त, 1858 को यशोहर जिले में डिप्टी कलेक्टर पद पर नियुक्त हुए। अपने लंबे सेवाकाल के दौरान बंकिमचन्द्र ने बंगाल प्रेसिडेन्सी के 15 जिलों में काम किया।

बंकिमचन्द्र स्वयं स्वतंत्रता संग्राम में भले ही न कूदे हों, उन्होंने सभा-सम्मेलनों में भाषण न दिए हों, किंतु लाखों-करोड़ों जनों के मनों में स्वतंत्रता की आशा-आकांक्षाओं को पल्लवित करने का काम उनकी कलम ने अवश्य किया। उनकी कलम से उपजे बंदेमातरम् मंत्र ने देशभक्त क्रांतिकारियों को हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ने की शक्ति प्रदान की। कॉलेज जीवन में उनकी कविताएं और गद्य संवाद प्रभाकर और संवाद साधुरंजन नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

बंकिम में अपना पहला और एकमात्र अंगेजी उपन्यास “राजमोहन्स वाइफ” लिखा। उनके उपन्यास कपालकुंडला (1866), मृणालिनी (1869), कृष्णाकांतेर विल (1878), राज सिंह (1882), आनंदमठ (1882), देवी चौधरानी (1884), सीताराम (1887) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्य पुस्तकें हैं- लोक रहस्य (1874), विज्ञान रहस्य (1878), साध्य (1879), विविध प्रबंध के दो भाग (1887-1892), धर्मतत्व (1888) और श्रीमद्भगवत गीता (1902) इत्यादि।